काव्यविधा-पञ्चदलम् (तान्का)

डॉ. ओमप्रकाश पारीक
एसोसिएट प्रोफेसर, कॉलेज शिक्षा निदेशालय, राजस्थान

(7)

भारवाहकचालकः
गृहान्निसृत्य
घूर्णित्वा हि
कुटुम्बं पश्यन् पुनः
भारवाहं पश्यति ।।

ट्रकचालक
घर से निकलकर
एकबार घूमकर
अपने परिवार को देखता हुआ
फिर खलासी को देखता है

* संवेदनायें जीवमात्र मे परमात्मतत्त्व को देखती हैं। ट्रकचालक महिनों घर से बाहर सड़क का जीवन जीते हैं। वे अपनी आँखों में परिवार को भरकर जाते हैं। वहाँ खलासी और ट्रकचालक ही सुख दुःख के साथी होते हैं।

(8)

गृहकमले।
गृहलक्ष्मी हि भाति
आनुकूल्येन
तया सर्वकार्येषु
प्रकाशः आमोदश्च

घर के कमल पर
घर की लक्ष्मी शोभित है
अपनी अनुकूलता से ।
उसके द्वारा सभी कार्यों में
प्रकाश और सुगन्ध है

(9)

गृहजनाक्ष्णोः हर्षेण
गृहिणी
स्वाक्षिणी पूरयन्ति
उद्यानशोभया हि
हर्षिता सारिकेव ।।

परिवार जनों की आँखों के
हर्ष से गृहिणी अपनी
आँखों को भरती है
उद्यान की शोभा से
हर्षित हुई सारिका की भाँति।।

(10)

उत्सवं हृदि
प्ररुह्योत्सवमयी
उल्लासयन्ती
त्यागदीप्तिमती च भाति
गृहे गृहिणी

उत्सव को हृदय में
उगा कर उत्सवमयी
सबको खुशी देती हुई
परिवार हेतु त्याग से अपने चारों-
ओर उजाला लिये शोभित होती है
घर में गृहिणी

(11)

प्रकाशयितुं गृहं
वर्तिकास्नेहाविव
ज्वलतः गृहीगृहिण्यौ
मुदा सहैव
त्यागदीपे ।।

उजाला करने के लिये घर में
बाती और तेल की भाँति
प्रसन्नता से जलते हैं
गृहिणी और गृहस्थ
साथ साथ त्यागरूपी दीये मे ।।